आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2563 • उदयपुर, शुक्रवार 31 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

फेफड़ों में था संक्रमण, बची अनुज की जान

मन्दसौर (मध्यप्रदेश) जिले के एक छोटे–से गांव के निवासी प्रकाश ग्वाला का 13 वर्षीय पुत्र अनुज सितम्बर, 2021 में तेज बुखार से ग्रस्त हो गया। दिनों–दिन उसका स्वास्थ्य गिर रहा था। चिन्तातुर दिहाड़ी मजदूर पिता ने इलाज के लिए कई अस्पतालों में दिखाया पर बेटे की हालत नहीं सुधरी। एक निजी हॉस्पीटल के चिकित्सक ने कुछ जांचें कराने की सलाह दी। जिसके लिए प्रकाश को अपनी पुश्तैनी डेढ़ बीघा जमीन भी बेचनी पड़ी। जांचों से ज्ञात हुआ कि अनुज को डेंगू के चलते फेफडो में संक्रमण है। जो पस व पानी से प्रभावित हैं।

इसका लीवर व किडनी पर प्रतिकूल असर पड रहा है। इसका शीघ्र इलाज जरूरी है। वे बेटे को लेकर उदयपुर के गीताजंली हॉस्पीटल आए जहां जांच के बाद 1.50 से 2 लाख रु. का चिकित्सा खर्च बताया गया। गरीब पिता सन्न रह गए। तभी किसी परिचित ने नारायण सेवा की जानकारी दी। वे संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल से मिले। जिन्होंने हरसंभव मदद का भरोसा दिया।

संस्थान ने हॉस्पीटल मैनेजमेंट और सम्बन्धित डॉक्टर से अनुज की बीमारी की जानकारी लेकर 1,68,000 रु. का चिकित्सा व दवाई शुल्क जमा कराया। 15 नवम्बर, 2021 को अनुज के फेफड़ों में संक्रमण का सफल ऑपरेशन हुआ। वह अब पूर्ण स्वस्थ है। पिता प्रकाश और पूरे परिवार ने बेटे के नवजीवन के लिए संस्थान को उसके बहुमूल्य सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया है।

सुगम हुआ अनोखी का जीवन

व्यक्ति की जिन्दगी में जब सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा होता है और वह अपनी गृहस्थी को लेकर सपने बुनता है, अनायास कोई घटना उसके सपनों को छिन्न–भिन्न कर देती है। ऐसी स्थिति में जो निराश होकर भी हौसले से काम लेते हैं,उन्हें कोई न कोई सम्बल मिल ही जाता है। राजस्थान के धौलपुर जिले के मलक पाड़ा–बाड़ी गांव के विवेक गर्ग के साथ कुछ ऐसा ही हुआ कि उनकी गृहस्थी आंसूओं में डूब गई। उनके घर में जल्दी ही पहली संतान आने की खुशी थी। 18 सितम्बर, 2013 को घर में लक्ष्मी आने की जो खुशी मिली कुछ ही पलों बाद वह काफूर हो गई।

नवजात बच्ची का दायां पांव टखने की हड्डियों में विकृति के कारण मुडा हुआ, जबकि बाएं हाथ का पंजा भी अंगूठे और उंगलियों में विकृति लिए हुए था। बालिका का नाम अनोखी रखा गया। जब वह एक साल की हुई तो उसे गोदी में ही उठाकर इधर–उधर ले जाना पड़ता था। चार वर्ष की होने पर उसे स्कूल में दाखिल तो करवा दिया गया लेकिन गोदी में ही उसे लाना ले जाना पड़ता था। इस दौरान माता–पिता को मजदूरी और घर के कामों में परेशानी का सामना करना पड़ा। दो–तीन साल बाद घर में दूसरी बच्ची ने जन्म लिया, जो एकदम सामान्य थी। अनोखी को इलाज के लिए जयपुर भी ले जाया गया लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। इस बीच इन्हें इस तरह के दिव्यांग बच्चों के निःशुल्क इलाज के लिए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के बारे में सूचना मिली। सन् 2017 में चार वर्ष की अनोखी को लेकर माता–पिता नीतू–विवेक गर्ग उदयपुर आए। जहां डॉक्टरों ने परीक्षण कर उसके लिए विशेष कैलिपर बनाया। जिसके सहारे अनोखी अब थोड़ा चलती भी है और खुश है।

अब उम्र बढ़ने के साथ तीसरी में पढ़ने वाली 9 साल की अनोखी के लिए अक्टूम्बर, 2021 में कैलिपर बदला गया है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ - पांव) माप शिविर
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

मुम्बई माता बाल संयोजन संस्था, महात्मा गांधी, विद्यालय के सामने, वाडा रोड, राजगुरु नगर, पूणे, महाराष्ट्र

समर्पण, अशोक विहार कॉलोनी, फेज-1, पहाड़िया, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेंदूर्णी जलगांव, महाराष्ट्र

साय साक्षी संघ, एल.आई.जी. 9/3, प्राथ बस स्टॉप फेस, 4, के.पी.एच.बी. कॉलोनी, लेदा कामलेक्स के पास, कुकटपल्ली, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

सुजाबाद भवन, नई सड़क, ग्वालियर (म.प्र.) 7412060406

जैन मंदिर, जैन धर्मशाला, 56/62 चाह चन्द, जीरो रोड, अजंता सिनेमा के पास, प्रयाग राज, यूपी 9351230393

रविवार 8 जनवरी 2022 प्रातः 5.00 बजे से

मेघराज भवन, नियर संतोषी माता मंदिर, इसामिया बाजार, कोठी, हैदराबाद, 9573938038

इस सम्मान समारोह में सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मैं तू कहेगी जो दूंगा। ऐसा भी कभी नहीं होना चाहिये कि, बिना विचारे प्रतिज्ञा कर लो। भावावेश में कभी प्रतिज्ञा न करें, सोच समझ कर बोलें, अन्तर्मन को जगाय नमः। अन्तर्मन को दशरथ जी ने नहीं जगाया। लेकिन देखो, समय की पहचान देखो। है समय बड़ा बलवान। कैसा समय आ गया? एक नारी के सामने मजबूर होकर बैठे हैं। जब कह दिया, बिना विचारे बोल दिया, रामजी की सौगन्ध है। आप और हम ऐसा नहीं करें। कोई गलत वचन मांग ले तो नहीं देना भाइयों और बहनों। अब रानी ने गहने भी पहन लिये। अच्छा प्रतिज्ञा याद रखना। हाँ, हाँ, याद है और बोल उठी– पहला वचन मैं मांगती हूँ। पहला वरदान मांगती हूँ वरदान नहीं मांगा, शाप मांग लिया। भरत जी को राज्य मिले। तापस वेश, उदासीन हो के वैराग्यवान हो के सब तरह के आकर्षण से मुक्त हो के, राम को चौदह साल का वनवास। दशरथ जी तो अचेत होकर गिर पड़े।

तापस वेश, विशेषी उदासी। चौदह बरस राम बनवासी।।

कैसा कूकृत्य किया? कैकेयी पर कलंक लग गया। बाद में तो कथा में आपको विदित है राम राम राम कहि, दशरथ जी ने अपने प्राण त्याग दिये। मृत्यु को प्राप्त होना पड़ा। ये राम कथा अजर, अमर गुणनिधि सुत होई– की कथा है। ये कथा, ये रामकथा आनन्द की कथा है। ये मन्थरा की कथा नहीं है, ये कैकेयी की कथा नहीं है। यदि राम भगवान केवल चक्रवर्ती सम्राट बन जाते तो कई चक्रवर्ती सम्राट की पंक्ति में वो भी हो जाते। देवताओं को लगा था। राम भगवान वन में पधारे, रावण का नाश करे। अर्थात् अभिमान का नाश करे, क्रोध का नाश करे। ये तामसिक भावों का नाश करे। इसलिए कथा है।

शब्दों के घाव

भारी कर्ज के बोझ के तले दबा हुआ एक व्यक्ति हताश होकर घर से भाग गया और गलियों, सड़कों की खाक छानते हुए आखिरकर वह जंगल में पहुंच गया। सभी तरह की परेशानियों से घिरा हुआ जब वह जंगल में पहुंचा तो एक पेड़ के सहारे सो गया। लेटे हुए वह अपनी नारकीय जिंदगी के बारे में सोचने लगा। सोचते हुए वह अपने–आप में इतना खो गया, उसको इस बात का पता नहीं चला कि उसके पास एक भालू आ गया है।

अचानक आए इस खतरे से वह घबरा गया और अपनी सांस रोककर चुपचाप लेट गया और मरने का दिखावा करने लगा। जब भालू ने देखा कि पेड़ के नीचे लेटा हुआ। इंसान मर गया है तो उसने नोचना शुरू कर दिया। भालू अपने नाखून और दांतों से उस व्यक्ति के ऊपर प्रहार करने लगा। भालू ने सुन रखा था कि एक समय किसी आदमी के सांस रोक लेने से एक भालू धोखा खा गया था। भालू के बुरी तरह नोंच खरोंच के बाद भी जब आदमी टस से मस नहीं हुआ तो भालू उसको मरा हुआ समझकर चला गया। कुछ दूरी पर जाने के बाद भालू ने पीछे पलटकर देखा तो वह हैरान रह गया। जिस इंसान को उसने मरा हुआ समझकर छोड़ दिया था वह पेड़ पर चढ़ चुका है। भालू ने हैरान होकर उस इंसान से कहा कि ' हे इंसान जरा सा कांटा चुभ जाने पर कोई भी व्यक्ति तिलमिला उठता है। मैंने तो तुम्हारी सारी चमड़ी उधेड़ दी, फिर भी तुमको जरा भी दर्द नहीं हुआ।' उस घायल इंसान ने भालू से कहा कि 'जंगल में रहने वाले भालू मैंने इंसानों के बीच रहकर दुख, तकलीफ और प्रताड़ना को जिस तरह सहन किया है, साहूकारों के ताने जिस तरह से सुने हैं, उसके मुकाबले यह दर्द तो कुछ भी नहीं है।' वास्तव में शब्दों के घाव गहरे होते हैं।

सिकंदर हुआ शर्मिंदा

इतिहास के नायकों, प्रतिनायकों से जुड़ी कई ऐसी घटनाएं हैं, जिनका तारीखी ब्यौरा तो नहीं मिलता पर इनकी लोक प्रसिद्धि सम्बे समय से है। ऐसी ही एक घटना सिकंदर से जुड़ी बताई जाती है। सिकंदर जब भारत आया तो रास्ते में उसकी मुलाकात एक फकीर से हुई। फकीर उसे देखकर हंसने लगा।

इस पर सिकंदर क्रोधित होकर फकीर से बोला 'तुम हंसकर मेरा अपमान कर रहे हो। तुम जानते नहीं कि मैं सिकंदर महान हूं।' इस पर फकीर और जोर से हंसने लगा और उसने सिकंदर से कहा, 'मुझे तो तुममें कोई महानता नजर नहीं आती। मैं तो तुम्हें बड़ा दीन और दरिद्र देख रहा हूं।' फकीर की बात से सिकंदर तिलमिला गया। उसने फकीर से कहा, 'तुम पागल हो गये हो, मैंने पूरी दुनिया को जीत लिया है।'

सिकंदर की बात सुन और उसकी तिलमिलाहट देख फकीर ने कहा 'ऐसा कुछ नहीं है तुम अभी भी साधारण ही हो, फिर भी तुम कहते हो तो मैं तुमसे एक बात पूछता हूं। मान लो तुम किसी रेगिस्तान में फंस गए और दूर–दूर तक पानी का कोई स्रोत नहीं है और हरियाली भी नहीं है, जहां तुमको पानी का आभास हो तो फिर इस स्थिति में एक लोटा पानी के बदले तुम मुझे क्या दोगे ?' सिकंदर ने कहा, मैं एक लोटा पानी के लिए आधा राज्य दे दूंगा।' इस पर फकीर ने कहा, 'अगर मैं आधे राज्य के लिए न मानूं तो क्या करोगे ?'

सिकंदर ने कहा, 'इतनी बुरी हालत में तो मैं अपना पूरा राज्य ही दे दूंगा।' फकीर फिर हंसने लगा और बोला, सिकंदर, तेरे राज्य का कुल मूल्य एक लोटा पानी के बराबर है तुम व्यर्थ में ही घमंड से चूर हुए जा रहे हो।' जाहिर है कि फकीर की बात सुनकर सिकंदर शर्मिंदा हो गया। वह समझ गया कि उसका अंहकारी होना महानता की नहीं बल्कि मूर्खता की निशानी है।

सम्पादकीय

उल्लास मन की ऊसर भूमि को उत्पादक कर देने वाला उपक्रम है। उल्लसित मन सदा उत्सवी भाव में जीता है। मन में यदि उत्सवी सोच हो तो निराशा का निविड़ अंधकार कहीं नहीं टिक सकता है। आज मानव मन के उल्लास क्षीण होता जा रहा है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं किंतु एक दिखता हुआ कारण यह भी है कि व्यक्ति अपनी तुलना अन्य से करते हुए कुंठित होकर अपना उल्लास खो रहा है। अपनी तुलना अन्यों से क्यों ? परमात्मा ने सभी मानवों को अलग– अलग खूबियों के साथ रचा है। किसी भी व्यक्ति की शरीर की रचना किसी अन्य व्यक्ति से मेल नहीं खाती। यहां तक कि हाथ की रेखाएं भी भिन्न हैं। हाथ की रेखा छोड़िये अंगुलियों के निशान भी अलग हैं। इतनी सूक्ष्म रचनाओं में भी इतनी भिन्नता है। फिर विचारों का तो क्या कहना? अन्य क्षमताओं में समानता की तुलना क्यों करें? सबकी ति अपने आप में अनूठी है इसलिए व्यर्थ में किसी से तुलना करके स्वयं को कमतर मान लेना क्या रचयिता के प्रति अविश्वास नहीं है? वास्तव में शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, वैचारिक भिन्नतायें ही सृष्टि का सौंदर्य है। इस सौंदर्य के पीछे हरेक व्यक्ति की स्वायत्तता का भाव परमात्मा के मन में रहा होगा। इस विशेषता को संजोते हुए जिस कार्य के लिये जीवन मिला है उसमें लगाने का प्रयत्न ही इस निराशा व हताशा से बचायेगा।

कुछ काव्यमय

परमात्मा ने सब मनुष्यों को
अपने–अपने ढंग से
बनाया है।
हमने उस मूल भाव को
विस्मृत कर,
अपनी समझ से
जीवन अपनाया है।
इससे मुक्त होकर
उस भाव को जानें।
उस परमात्मा के
प्रसाद को मानें।
मानव जीवन को
सफलता तक ले जायें।
मन के उल्लास और उत्साह
कम न होने पायें।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सच्चे कंगन

सोने– चांदी गहने के हमारे तन की शोभा होते हैं, किंतु निष्ठा, करुणा और मानवता तो हमारी आत्मा के आभूषण हैं।

एक बालक नित्य विद्यालय पढ़ने जाता था । घर में उसकी माता थी। मां अपने बेटे पर प्राण न्योछावर किए रहती थी। उसकी हर मांग पूरी करने में आनन्द अनुभव करती। पुत्र भी पढ़ने– लिखने में बड़ा परिश्रमी था। एक दिन दरवाजे पर किसी ने माई ओ माई पुकारते हुए दस्तक दी। वह द्वार पर गया देखा कि एक फटेहाल बुढ़िया हाथ फैलाए खड़ी थी। उसने कहा बेटा कुछ भीख दे दे।

बुढ़िया के मुंह से बेटा सुनकर वह भावुक हो गया और मां से आकर कहने लगा कि एक माता जी खाना मांग रही हैं। उस समय घर में कुछ

खाने की चीज थी नहीं इसलिए मां ने कहा, बेटा, – रोटी साग तो कुछ बचा नहीं है। चाहो तो चावल दे दो।

पर बालक ने हठ करते हुए कहा – मां, चावल से क्या होगा ? तुम जो अपने हाथ में सोने का कंगन पहने हो, वहीं दे दो न इस बेचारी को। मैं जब बड़ा होकर कमाऊंगा तो तुम्हें दो कंगन बनवा दूंगा। मां ने बालक का मन रखने के लिए सोने का कंगन कलाई से उतारा और कहा– लो दे दो। बालक खुशी – खुशी भिखारिन को दे आया। भिखारिन को तो मानो खजाना ही मिल गया। कंगन बेचकर उसने परिवार के बच्चों के लिए अनाज, कपड़े आदि जुटा लिए। उसका पति अंधा था।

उधर वह बालक पढ़– लिखकर विद्वान हुआ, काफी नाम कमाया। एक दिन वह मां से बोला, मां, अपने हाथ का नाप दे दो, मैं कंगन बनवा दूं। उसे अपना वचन याद था। माता ने कहा मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि अब कंगन शोभा नहीं देंगे। हां, कलकत्ते के तमाम गरीब, दीन– दुःखी बीमार बालक विद्यालय और चिकित्सा के लिए मारे – मारे फिरते हैं। जहां निःशुल्क पढ़ाई और चिकित्सा की व्यवस्था हो ऐसा कर दे। मां के उस यशस्वी पुत्र का नाम था– ईश्वचन्द्र विद्यासागर।

–कैलाश 'मानव'

वो करो जो बहुत कम लोग करते हैं

इस जिंदगी में बड़ी सफलता न मिलने का सबसे बड़ा कारण यह है कि वो ऐसी सोच रखता है। जैसी दुनिया के 99 प्रतिशत लोग रखते हैं। अगर आप बड़ी सफलता चाहते है तो आपकी वो करना होगा जो सिर्फ एक प्रतिशत लोग करते हैं। इस बात को इस कहानी से समझें– एक बार एक चित्रकार ने बहुत ही सुन्दर पैंटिंग बनाई। उसे पैंटिंग में कहीं भी कमी नजर नहीं आ रही थी। उसने सोचा क्यों न यह पैंटिंग लोगों को दिखाई जाएं।

उसने पैंटिंग को शहर के बीचों बीच लटका दिया और नीचे लिख दिया। किसी को इसमें कमी दिखाई दे तो वे उस जगह निशान लगा दें। शाम को जब चित्रकार पैंटिंग के पास पहुंचा तो बहुत दुःखी हुआ क्योंकि पूरी पैंटिंग पर निशान लगे थे और वह पूरी तरह

से खराब हो चुकी थी। समझ में नहीं आ रहा था कि अब वो क्या करे। तभी एक दोस्त उससे मिलने आया। उसे दुःखी देखकर कारण पूछा– चित्रकार ने अपनी समस्या उसे बता दी। सारी बात सुनने के बाद दोस्त हंसने लगा और बोला कि यह तो बहुत ही छोटी समस्या है। उसने कहा कि तुम फिर से एक पैंटिंग बनाओ और उसे कल शहर के बीचों बीच लटका देना और उसके नीचे फिर से लिखना कि इस पैंटिंग में जिस किसी को भी कोई कमी दिखाई दे वो उसे सही कर दे। उस चित्रकार ने अलगे दिन ऐसा ही किया। जब शाम को उसने देखा तो उस पैंटिंग में किसी ने कुछ भी नहीं किया था यह देखकर वह समझ गया कि किसी दूसरे में कमियां निकालना आसान होता है। लेकिन उस कमी को दूर करना बहुत ही मुश्किल होता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

विनम्रता

एक बार नदी को अपने पानी के प्रचंड प्रवाह पर घमंड हो गया नदी को लगा कि मुझमें इतनी ताकत है कि पहाड़, मकान पेड़, पशु , मानव आदि को बहाकर ले जा सकती हूं। एक दिन नदी ने बड़े गर्वीले अंदाज में समुद्र से कहा 'बताओं मैं तुम्हारे लिये क्या लाउँ ? मकान, पशु मानव, वृक्ष जो तुम चाहो, उसे मैं जड़ से उखाड़कर ला सकती हूं। समुद्र समझ गया कि नदी को अंहकार हो गया है। उसने नदी से कहा यदि तुम मेरे लिये कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी सी घास उखाडकर ले आओ नदी ने कहा, बस इतनी सी बात अभी लेकर आती हूँ। नदी अपने जल का पूरा जोर लगाया पर घास नहीं उखड़ी। नदी ने कई बार जोर लगाया, लेकिन असफलता ही हाथ लगी। आखिर नदी हारकर समुद्र के पास पहुची और बोली मैं वृक्ष मकान, पहाड़ आदि तो उखाडकर ला सकती हमं मगर जब भी घास उखाड़ने के लिए जोर लगाती हूं वह नीचे झुक जाती है और मे खाली हाथ ऊपर से गुजर जाती हूं। समुद्र ने नदी की पूरी बात ध्यान से सुनी और मुस्कराते हुए बोला, जो पहाड़ और वृक्ष जैसे कठोर होते हैं वे आसानी से उखड़ जाते हैं। किंतु घास जैसी विनम्रता जिसने सीख ली हो उसे प्रचंड आंधी–तूफान का प्रचंड वेग भी नहीं उखाड़ सकता। जीवन में खुशी का अर्थ लड़ाइया लड़ना नहीं बल्कि उसमें बचना है, कुशलतापूर्वक जीवन पीछे हटना भी अपने आप में एक जीत है क्योंकि अभिमान फरिश्तों को भी शैतान बना देता है और नम्रता साधारण व्यक्ति को भी फरिश्ता बना देती है।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

फिल्म निर्माता ने एक बार फिर अपनी फिल्म के पसन्द नहीं आने हेतु अफसोस प्रकट किया और कैलाश से पूछा– आप टीवी. चैनलों पर प्रवचन क्यूं नहीं देते ? कैलाश को उसकी बात सुन कर हंसी आ गई, वह बोला– मैं क्या कोई साधु–संत हूँ जो प्रवचन दूंगा और अगर दूं भी तो ऐसा कौन सा चैनल है तो मेरे जैसे व्यक्ति का प्रवचन चलायेगा।

फिल्म बनाने वाले ने कहा– साधु–संत होना जरूरी नहीं है, आप सेवा का अच्छा कार्य कर रहे हो, जो बात फिल्म के माध्यम से लोगों को बताना चाहते थे वह टी.वी. चैनलों के जरिये बता सकते हैं।

कैलाश को टीवी. चैनलों की शक्ति का पूर्ण एहसास था, वह यही सोचता था कि यह अत्यन्त दुर्लभ और व्ययसाध्य माध्यम है इसलिये इस दिशा में उसने कभी प्रयत्न ही नहीं किया था। वह यह सब सोच रहा था तभी उधर से फोन पर आवाज आई–मैं आपको एक फोन नं. देता हूँ आप इस बात पर करके देखो, कुछ होता है तो आपकी संस्था का ही भला हो जायेगा।

कैलाश ने फोन नं. ले लिया, अगले दिन इस नम्बर पर फोन मिलाया तो पता चला कि यह आस्था चैनल से जुड़े किसी व्यक्ति का मोबाइल न. है। कैलाश आस्था चैनल देखता था, इस पर निरन्तर धार्मिक कार्यक्रम आते थे। यह पता चलते ही कि यह नम्बर आस्था वालों का है, उसके मन में लड्डू फूटने लगे।

वह सोचने लगा कि यदि इस चैनल पर उसे कुछ समय मिल जाये तो नारायण सेवा के कार्यों का दूर दूर तक प्रचार हो सकता है। इस चैनल का दर्शक वर्ग यही था, जिस तक पहुँचना कैलाश का लक्ष्य था।

अंग - 196

लौंग की उपयोगिता

लौंग की छोटी–सी काली कली गुणों की खान है। यह कटु, चरपरी हल्की कसैली होती है। यह नेत्रों के लिए अत्यंत गुणकारी होती है। यह भोजन की रुचि बढ़ाती है। यह कफ–पित्त दोष को शांत करने वाली तथा दूषित रक्त को शुद्ध करने वाली होती है।

लौंग में सूक्ष्म जीवों को मारने की शक्ति होती है, इसलिए 'ऐंटीसैप्टिक' और ऐंटी बायोटिक' दवाओं में लौंग का इस्तेमाल होता है। टूथपेस्ट और माउथवाश का तो यह खास अंग है। मुंह और गले में लगाई जाने वाली तमाम दवाओं में लौंग का तेल मिलाया जाता है।

घरेलू इलाज

खांसी में लौंग को अंगारों पर भून कर फूल जाने के बाद उसे मिश्री के टुकड़े के साथ मुंह में रखने से खांसी बंद हो जाती है। भुनी लौंग को शहद के साथ दिन में तीन बार चाटने से खांसी में आराम मिलता है।

दो लौंग मुंह में रखकर धीरे–धीरे चबाने से या पानी के साथ पीसकर गुनगुना कर सेवन करने से जी मिचलाना बंद हो जाता है।

चार–पांच लौंग को पानी में उबालें। जब उसमें पानी आधा शेष रह जाए तो उसमें मिश्री या शक्कर मिलाकर पीएं। इससे उल्टी में लाभ होगा। इस काढ़े से सिरदर्द में भी आराम मिलता है।

लौंग व हरड़ को पानी में उबाल कर उसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर पीने से अपच, अजीर्ण दूर होता है।

पेट का भारीपन, अरुचि, अपचन, डकारों आदि में लौंग के तेल का सेवन फायदेमंद होता है।

दांत के दर्द में लौंग के तेल का फोहा लगाने से आराम मिलेगा। तेल न हो तो लौंग को दांतों के बीच दबाकर खाएं।

पायरिया होने पर दांतों पर लौंग के तेल की मालिश करने और लौंग चूसते रहने से फायदा होता है। इससे सेवन से मुंह की दुर्गंध चली जाती है।

लौंग को भूनकर चाटने से गले की खराश दूर होती है।

भिगोई हुई लौंग को पीसकर शीतल पानी और मिश्री के साथ पीने से हृदय की जलन दूर हो जाती है।

संधिवात दर्द, सिर शूल तथा दांत दर्द में लौंग का तेल आराम पहुंचाता है। गठिया में लौंग के तेल की मालिश लाभकारी होती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

ये यात्रा भगवान क्या बताऊं– महाराज? आपको मैं छोटा–सा आदमी प्रकृति के बारे में क्या जानूं? पर सुना है कई निहारिकाएं होती हैं। एक नहीं, कई निहारिकाएं, हाँ, एक एक निहारीका में कई सूर्य, कई चन्द्र, कई पृथ्वी वाह! उसी में से एक सूर्य भगवान भास्कर भगवान, भानु भगवान। उस भानु भगवान का चक्कर पृथ्वी भी लगा रही है। जिसमें मैं बैठा हूँ। यहाँ परमानंद में बैठा हूँ, लग ही नहीं रहा भाई पृथ्वी घूम रही है। सुना है पर हम तो यहीं पे हैं। हम तो अपनी जगह पर बैठे हुए यहीं।

इतनी धीमी गति से घूम रहे हैं कि हमारी जगह वो ही कुर्सी, वो ही टेबल, वो ही जगह, वो ही पृथ्वी, लेकिन घूम रहे हैं। पर्यावरण में चक्कर लगा रहे हैं। ये वाडा फला भी कौन ले गया? ईश्वर ले गया। हाँ, कालीवास वापस गये। हाँ, गये तो गये। कालीवास नाम ही रख दिया। कालीवास हाँ कहते हैं कोटड़ा तहसील कहते हैं उदयपुर का काला पानी है। अब तो महाराज बहुत सुविधा हो गई है। फोर लाईन पिण्डवाड़ा तक बन गई। जसवन्तगढ़ से आगे पिण्डवाड़ा रोड़। उसमें बाएं घूमते हैं कोटड़ा की रोड़ आ जाती है। आज कल रोड़ अच्छी है कालीवास वापस पहुँचे। पालियाखेड़ा वहाँ पर भी 300 से अधिक 315 रोगी बंधुगण भाई पधारे 1400–1500 अन्य महानुभव पधारे। ये पौष्टिक आहार, ये पौष्टिक आहार, ये सोयाबीन तेल परम पूज्य अशोक जी गहलोत साहब इतना अभिभुत हो गए, इतना प्रेम मय हो गए। उन्होंने एक नाम दिया था छाछ राबड़ी वाले कैलाश जी। छाछ राबडी वाली नारायण सेवा। आगे आएगा भीलवाड़ा सिरोही भी आगे आएगा। हम क्या लाते हैं? हम तो घूम रहे हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 323 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक. कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व. नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल. ई, डी-71 श्यामा रावल नगर, हिम सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर -3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियों का गुडा, उदयपुर
सम्पादक: लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल: mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023